मैंने सुषुम्ना के द्वार में प्रवेश किया

सन्त-कवयित्री लल्लेश्वरी द्वारा लिखित वाख

लल्ल, यानी मैंने अपने अन्तर की गहराई में, सुषुम्ना के मार्ग में प्रवेश किया

और शिव-शक्ति का मिलन देखा।

वाह! कितना अद्‌भुत!

मैंने सहस्रार में स्थित अमृत-सरोवर में

स्वयं को पूर्णतया लीन कर दिया।

जीवित रहते हुए ही मेरी मृत्यु हो गई है।

अब संसार मेरा क्या कर लेगा!

निरन्तर अभ्यास द्वारा,

साधक समस्त प्रकट जगत के साथ एकाकार हो जाता है।

नाम व रूप का जगत शून्य में विलीन हो जाता है।

जब शून्य का लोप हो जाता है,

तब केवल परम तत्त्व रह जाता है जो समस्त दुःखों के परे है।

हे साधक, यही सच्चा उपदेश है।

अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।